MVS FOUNDATION

FREE NOTES

INDIAN CULTURE AND HERITAGE (223)

CHAPTERWISE NOTES

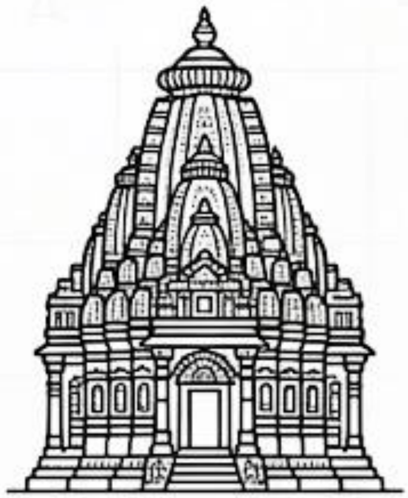

INDIAN CULTURE & HERITAGE

Sl. No.	Module	Chapters (Public Examination)	Marks
1	Module 1: Culture	**L-1: Culture: An Introduction (Sanskriti aur Sabhyata)**	10
2	Module 2: History and Culture through the Ages	**L-4: Medieval India** **L-5: Modern India**	15
3	Module 7: Education	**L-18: Education in India**	11
4	Module 8: Social Structure	**L-19: Indian Social Structure**	10

Component	Details	Marks
Public Exam (Selected Module 1,2,7,8)	Total Chapters : 5	46
Practical Exam	Practical	0
TMA	Tutor Marked Assignment	20
Final Possible Marks		**66 Marks**

विषय- सूची

1	संस्कृति - एक परिचय
2	मध्यकालीन भारत
3	आधुनिक भारत
4	भारत में शिक्षा
5	भारतीय समाज की संरचना

1

संस्कृति - एक परिचय

परिचय

संस्कृति मानव जीवन का महत्वपूर्ण अंग है। यह हमारे सोचने-समझने, व्यवहार करने और जीवन जीने के तरीकों को दर्शाती है। संस्कृति के माध्यम से समाज के मूल्य, परंपराएँ और ज्ञान एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचते हैं।

संस्कृति – एक परिचय

- अंग्रेज़ी शब्द **Culture** लैटिन भाषा के **Cult / Cultus** से लिया गया है जिसका अर्थ है विकसित करना या परिष्कृत करना।
- संस्कृत में संस्कृति शब्द धातु 'कृ' (करना) से बना है।
- इससे तीन शब्द बनते हैं –
    - **प्रकृति** – मूल स्थिति
    - **संस्कृति** – परिष्कृत स्थिति
    - **विकृति** – बिगड़ी हुई स्थिति

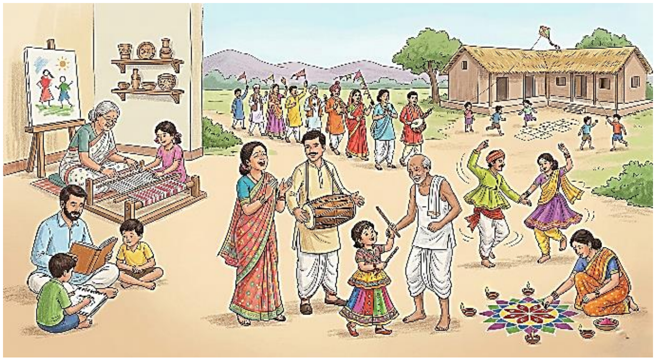

संस्कृति की अवधारणा

संस्कृति: संस्कृति जीवन की वह विधि है जिसमें व्यक्ति सोचता, कार्य करता और जीवन जीता है।

संस्कृति के प्रमुख तत्व

- भोजन करने का तरीका
- पहनावा
- भाषा
- पूजा-पद्धति
- कला, संगीत और साहित्य
- रीति-रिवाज और परंपराएँ

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

संस्कृति के घटक

संस्कृति के दो भाग होते हैं –

- **भौतिक संस्कृति**
- **अभौतिक संस्कृति**

भौतिक संस्कृति

- जीवन के भौतिक पक्ष से संबंधित वस्तुएँ।
- जैसे – वस्त्र, भोजन, घर और उपकरण।

अभौतिक संस्कृति

विचारों, विश्वासों और भावनाओं से संबंधित पक्ष।

संस्कृति की विशेष स्थिति

- संस्कृति एक स्थान से दूसरे स्थान पर भिन्न होती है।
- इसका विकास ऐतिहासिक प्रक्रियाओं से होता है।

संस्कृति और सभ्यता

सभ्यता: सभ्यता का अर्थ जीवन के बेहतर तरीके और आवश्यकताओं की पूर्ति के साधनों से है।

संस्कृति और सभ्यता का अंतर

- **संस्कृति** – मन और हृदय की आंतरिक भावना से जुड़ी है।
- **सभ्यता** – बाहरी जीवन-शैली और साधनों से संबंधित है।
- संस्कृति में कला, संगीत, नृत्य और उच्च उपलब्धियाँ शामिल होती हैं।

मुख्य तथ्य

- कोई व्यक्ति गरीब हो सकता है लेकिन फिर भी संस्कृत हो सकता है।
- कोई व्यक्ति धनी हो सकता है लेकिन आवश्यक नहीं कि वह **संस्कृत** हो।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

संस्कृति और विरासत

सांस्कृतिक विरासत: जो संस्कृति हमें अपने पूर्वजों से प्राप्त होती है उसे **सांस्कृतिक विरासत** कहते हैं।

सांस्कृतिक विरासत के स्तर

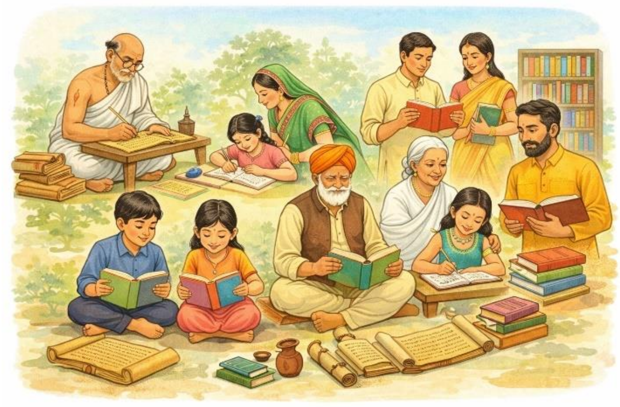

- मानवता की विरासत
- राष्ट्रीय सांस्कृतिक विरासत

विरासत के स्वरूप

- स्थापत्य और स्मारक
- ज्ञान और ग्रंथ
- वैज्ञानिक खोजें
- दर्शन और साहित्य

सांस्कृतिक विरासत के उदाहरण

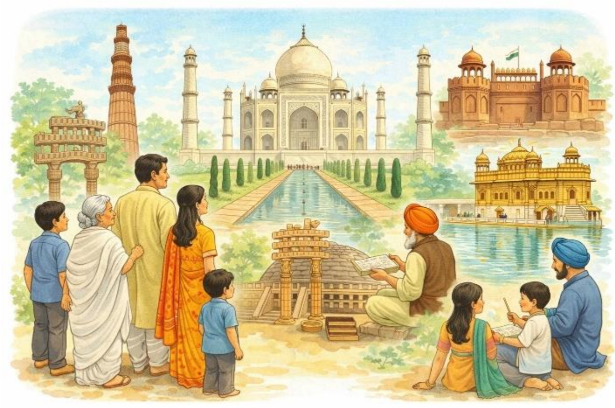

- ताजमहल
- लाल किला
- कुतुब मीनार
- सांची स्तूप
- स्वर्ण मंदिर

संस्कृति की सामान्य विशेषताएँ

1. संस्कृति सीखी जाती है: व्यक्ति इसे परिवार और समाज से सीखता है।

2. संस्कृति साझा होती है: समाज के लोग मिलकर इसे अपनाते हैं।

3. संस्कृति संचयी होती है: ज्ञान एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक बढ़ता जाता है।

4. संस्कृति परिवर्तनशील होती है: समय के साथ इसमें परिवर्तन होता है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

5. संस्कृति गतिशील होती है: यह स्थिर नहीं रहती, निरंतर विकसित होती है।

मानव जीवन में संस्कृति का महत्व

- संस्कृति जीवन से गहराई से जुड़ी होती है।
- यह मानव को मानव बनाती है।
- संस्कृति जीवन जीने का तरीका सिखाती है।
- यह परंपराओं, विश्वासों और मूल्यों से जुड़ी होती है।
- संस्कृति प्रेम, सहिष्णुता और शांति का संदेश देती है।

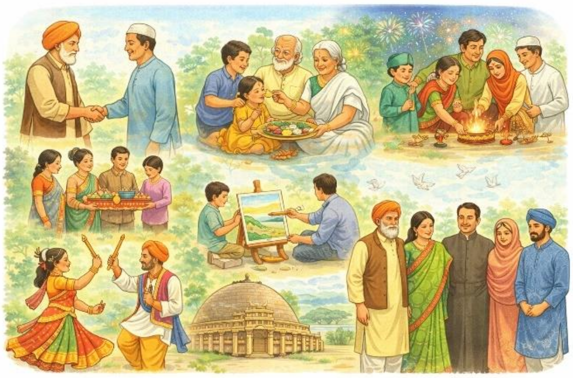

संस्कृति के मूल मूल्य

- सत्य
- शिव
- सुन्दर

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

TOP 5 QUESTIONS

प्रश्न-1. संस्कृति क्या है?

उत्तर- संस्कृति जीवन जीने की वह विधि है जिसमें व्यक्ति के विचार, व्यवहार, परंपराएँ, कला, भाषा और विश्वास शामिल होते हैं। यह समाज के मूल्यों और अनुभवों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाती है।

प्रश्न-2. संस्कृति और सभ्यता में क्या अंतर है?

उत्तर- संस्कृति मन और हृदय की आंतरिक भावना से जुड़ी होती है, जबकि सभ्यता जीवन के बाहरी साधनों और सुविधाओं से संबंधित होती है। संस्कृति व्यक्ति के विचारों और मूल्यों को दर्शाती है, जबकि सभ्यता जीवन की बाहरी प्रगति को दर्शाती है।

प्रश्न-3. सांस्कृतिक विरासत क्या है?

उत्तर- जो संस्कृति, मूल्य, परंपराएँ और ज्ञान हमें अपने पूर्वजों से प्राप्त होते हैं उन्हें सांस्कृतिक विरासत कहते हैं। यह पीढ़ी दर पीढ़ी सुरक्षित रखी जाती है और समाज की पहचान बनती है।

प्रश्न-4. संस्कृति की सामान्य विशेषताएँ क्या हैं?

उत्तर- संस्कृति सीखी जाती है, समाज द्वारा साझा की जाती है, समय के साथ संचयी और परिवर्तनशील होती है तथा निरंतर गतिशील रहती है। यह समाज में आदर्श व्यवहार और जीवन के नियम भी प्रदान करती है।

प्रश्न-5. मानव जीवन में संस्कृति का क्या महत्व है?

उत्तर- संस्कृति मानव को जीवन जीने का सही तरीका सिखाती है। यह नैतिक मूल्यों, परंपराओं और सामाजिक व्यवहार को विकसित करती है तथा प्रेम, सहिष्णुता और शांति जैसे गुणों को बढ़ावा देती है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

2

मध्यकालीन भारत

परिचय

मध्यकालीन भारत में धर्म, भाषा, लोककला, संगीत और कला के क्षेत्र में महत्वपूर्ण विकास हुआ। इस काल में इस्लाम, सूफी आंदोलन और भक्ति आंदोलन ने भारतीय संस्कृति को गहराई से प्रभावित किया और भारत में मिश्रित संस्कृति का विकास हुआ।

दिल्ली सल्तनत के अधीन लोगों का जीवन

समाज

भारतीय समाज चार मुख्य वर्गों में विभाजित था –

- **विशिष्ट वर्ग**
- **पुरोहित वर्ग**
- **पुरवासी**
- **कृषक वर्ग**

विशिष्ट वर्ग

- इसमें सुल्तान, उसके संबंधी, सामंत और जमींदार शामिल थे।
- इस वर्ग के पास शक्ति और धन दोनों थे।
- ये लोग ऐश्वर्यपूर्ण जीवन व्यतीत करते थे।

पुरोहित वर्ग

- हिंदुओं में **पुरोहित** और मुसलमानों में **उलेमा** थे।
- इन्हें जीविका के लिए कर-मुक्त भूमि दी जाती थी।

नगरवासी

- शहरों में व्यापारी, कारीगर, अधिकारी और सैनिक रहते थे।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- कारीगर अलग-अलग बस्तियों में रहते थे।
- शाही कारखानों में सुंदर वस्तुएँ बनाई जाती थीं।

कृषक वर्ग

- किसान गाँवों में रहते थे।
- वे राज्य को भूमि कर देते थे।
- उनका जीवन कठिन था।

व्यापार

- व्यापार काफी उन्नत था।
- दिल्ली आयात-निर्यात का प्रमुख केंद्र था।
- इस समय चाँदी के **टके (सिक्के)** प्रचलित थे।

धार्मिक वातावरण

- इस समय हिंदू धर्म में कई कुरीतियाँ बढ़ गई थीं।
- इस्लाम समानता और भाईचारे की बात करता था।
- इसी संपर्क से **भक्ति आंदोलन** और **सूफी आंदोलन** का उदय हुआ।

इस्लाम और सूफीवाद का उदय

इस्लाम

- पैगम्बर **मुहम्मद** ने 7वीं शताब्दी में इस्लाम धर्म का उपदेश दिया।
- इस्लाम के मुख्य ग्रंथ **कुरान** हैं।

इस्लाम के पाँच मुख्य सिद्धांत

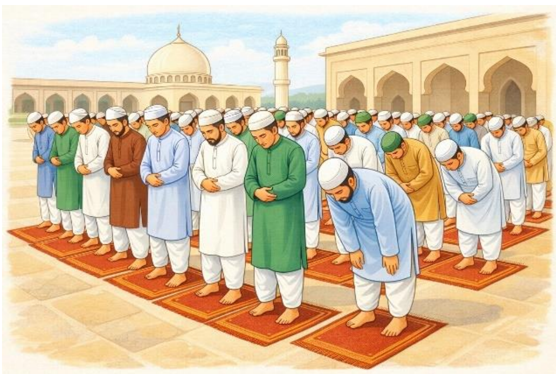

- **तौहीद** – अल्लाह में विश्वास
- **नमाज़** – दिन में पाँच बार प्रार्थना
- **रोज़ा** – रमजान में उपवास
- **ज़कात** – दान देना

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- **हज़** – मक्का की तीर्थ यात्रा

सूफी मत का उदय

सूफी: इस्लामी रहस्यवाद की विचारधारा को **सूफी मत** कहा जाता है।

सूफी विचार

- सभी धर्मों की एकता में विश्वास।
- प्रेम, दया और सहिष्णुता पर बल।
- संगीत के माध्यम से ईश्वर की भक्ति।

प्रमुख सूफी संत

- ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती
- निजामुद्दीन औलिया
- फरीदुद्दीन गंज-ए-शकर

सूफी केंद्र

- **खानकाह** – सूफी संतों का निवास स्थान।
- **दरगाह** – सूफी संतों की समाधि स्थल।

राजनीतिक पृष्ठभूमि

दिल्ली सल्तनत

1. 1206 से 1526 तक दिल्ली पर सुल्तानों का शासन रहा।

2. प्रमुख वंश –

- **गुलाम वंश**
- **खिलजी वंश**
- **तुगलक वंश**
- **सैयद वंश**
- **लोदी वंश**

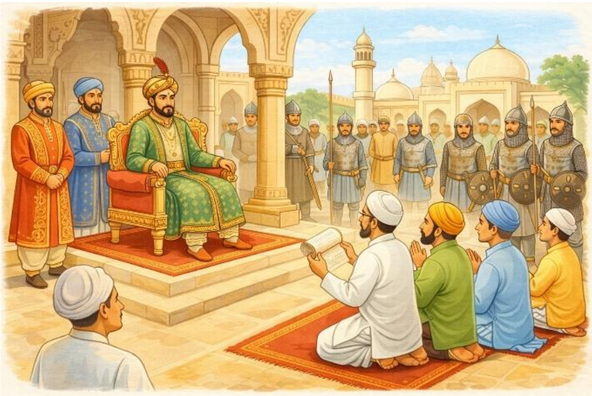

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

मुगल शासन

- 1526 में मुगलों ने सत्ता स्थापित की।
- **प्रमुख मुगल शासक** – बाबर, हुमायूँ, अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ, औरंगजेब

अकबर

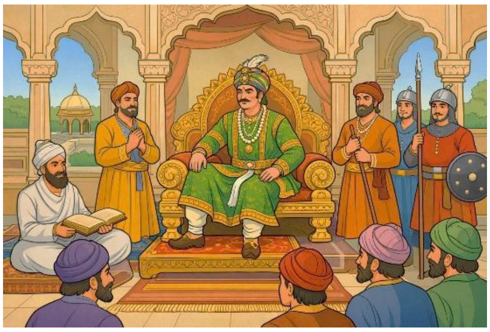

- धार्मिक सहिष्णुता की नीति अपनाई।
- विभिन्न धर्मों के विचारों को मिलाकर **दीन-ए-इलाही** की स्थापना की।
- फतेहपुर सीकरी में **इबादतखाना** बनवाया।

सांस्कृतिक विकास

वास्तुकला: इस समय **इंडो-इस्लामिक शैली** विकसित हुई।

प्रमुख विशेषताएँ

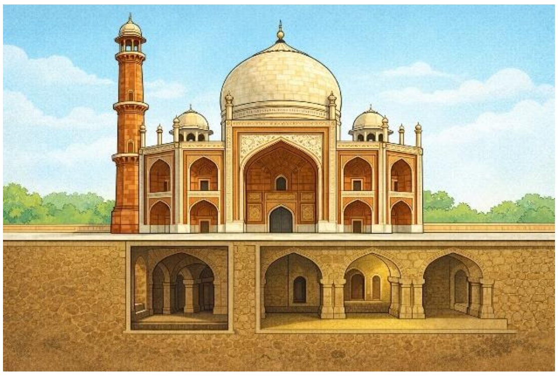

- **गुम्बद**
- **मीनार**
- **मेहराब**
- **तहखाना**

मुगल उद्यान

- मुगल शासकों ने सुंदर बाग बनवाए।
- जैसे – शालीमार बाग और निशात बाग।

संगमरमर कला

- रंगीन पत्थरों से सजावट की कला को **पच्चीकारी** कहा जाता है।
- इसका सुंदर उदाहरण ताजमहल में मिलता है।

सिक्के

न्यूमिस्मेटिक्स

- सिक्कों के अध्ययन को **न्यूमिस्मेटिक्स** कहा जाता है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- इससे इतिहास की महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है।

भक्ति आंदोलन

भक्ति आंदोलन : ईश्वर के प्रति प्रेम और भक्ति पर आधारित धार्मिक आंदोलन।

मुख्य विशेषताएँ

- ईश्वर में विश्वास।
- जाति-भेद का विरोध।
- सरल भाषा में उपदेश।

प्रमुख संत

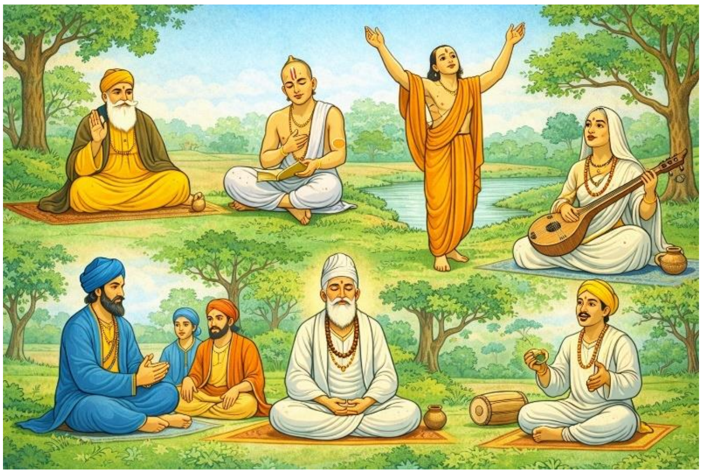

गुरु नानक

- एक ईश्वर में विश्वास।
- मूर्ति पूजा और कर्मकांड का विरोध।

रामानुज

- दक्षिण भारत के संत।
- भक्ति का प्रचार जनभाषा में किया।

रामानंद: सभी जातियों के लोगों को भक्ति का अधिकार दिया।

कबीर

- हिंदू-मुस्लिम एकता पर बल।
- एकेश्वरवाद का प्रचार।

चैतन्य महाप्रभु: भगवान कृष्ण की भक्ति का प्रचार।

मीराबाई: कृष्ण भक्ति की प्रमुख संत कवयित्री।

नामदेव: मराठी भाषा में भक्ति रचनाएँ लिखीं।

भक्ति आंदोलन की दो धाराएँ

- **निर्गुण भक्ति** – निराकार ईश्वर की उपासना।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- **सगुण भक्ति** – साकार ईश्वर की उपासना।

लोककलाओं का विकास

- ग्रामीण समाज में अनेक लोककलाएँ विकसित हुईं।
- त्योहारों और सामाजिक अवसरों पर नृत्य और संगीत होते थे।

प्रमुख लोकनृत्य

- **गरबा**
- **कालबेलिया**
- **भांगड़ा**
- **गिद्धा**
- **लावणी**

लोक कला के अन्य रूप

- कढ़ाई
- वस्त्र सजावट
- कठपुतली कला
- लोक नाटक

चित्रकला

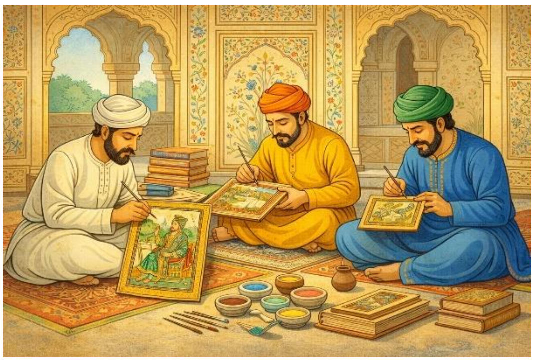

- इस काल में चित्रकला पर फारसी कला का प्रभाव पड़ा।
- हुमायूँ अपने साथ फारसी चित्रकार भारत लाया।
- इससे **मुगल चित्रकला शैली** का विकास हुआ।

संगीत

- मध्यकालीन भारत में संगीत का बहुत विकास हुआ।
- संगीत पर भारतीय और फारसी दोनों परंपराओं का प्रभाव पड़ा।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

संगीत के प्रमुख रूप

- ध्रुपद
- ख्याल
- कव्वाली

संगीत के विकास में योगदान

- मुगल दरबार में संगीत को संरक्षण मिला।
- कई प्रसिद्ध संगीतज्ञों ने संगीत को आगे बढ़ाया।

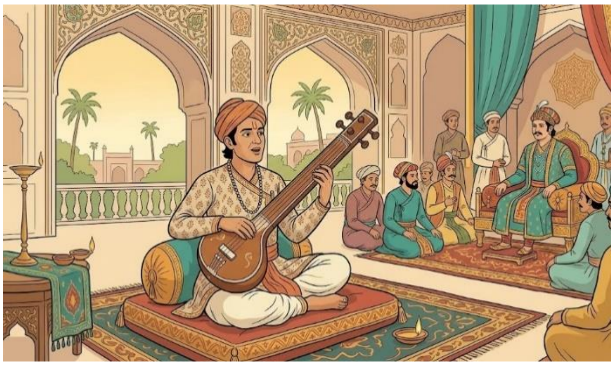

प्रमुख संगीतज्ञ

- **तानसेन** – अकबर के दरबार के महान संगीतज्ञ।
- उन्होंने अनेक रागों की रचना की।

भाषाओं का विकास

भाषाओं का विकास

- मध्यकाल में अनेक आधुनिक भारतीय भाषाओं का विकास हुआ।
- क्षेत्रीय भाषाएँ अधिक लोकप्रिय हुईं।

प्रमुख भाषाएँ: हिंदी, उर्दू, बंगाली, मराठी, गुजराती, पंजाबी

भाषा विकास के कारण

- भक्ति संतों ने जनभाषाओं में उपदेश दिए।
- इससे आम जनता आसानी से धार्मिक विचार समझ सकी।

सिख धर्म का उदय

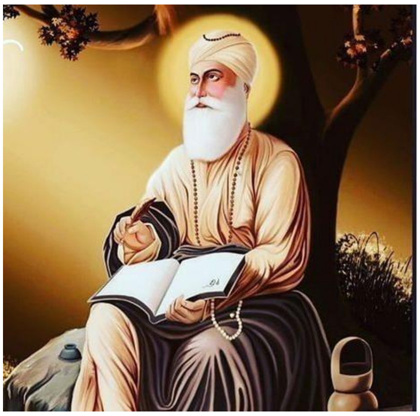

सिख धर्म

सिख धर्म की स्थापना **गुरु नानक** ने की।

गुरु नानक की शिक्षाएँ

- एक ईश्वर में विश्वास

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- सभी मनुष्यों की समानता
- प्रेम और सेवा का महत्व

सिख परंपरा

- गुरु नानक के बाद नौ अन्य गुरु हुए।
- सिख धर्म में गुरु परंपरा का विशेष महत्व है।

पारसी धर्म (जोरोएस्ट्रियनिज्म)

- **स्थापना:** 8वीं शताब्दी (ई.पू.) में जरथुस्त ने पर्शिया (ईरान) में इस धर्म की नींव रखी।
- **प्रमुख शिक्षा:** इन्होंने 'एकेश्वरवाद' (एक ईश्वर), अग्नि पूजा, और करुणा एवं दान का उपदेश दिया।
- **पवित्र ग्रंथ:** इनके धर्म की सभी शिक्षाएं 'जेन्द अवेस्ता' नामक ग्रंथ में संकलित हैं।
- **भारत आगमन:** पारसी समुदाय गुजरात के नवसारी में आकर बसा और भारतीय संस्कृति में बड़ा योगदान दिया।
- **प्रमुख व्यक्तित्व:** दादाभाई नौरोजी और जमशेदजी टाटा जैसे महान लोग इसी समुदाय से थे।

लोक कलाओं का विकास

- **सृजनात्मकता**
- **कृषि से जुड़ाव**
- **सांस्कृतिक एकता**
- **समावेशी प्रकृति**

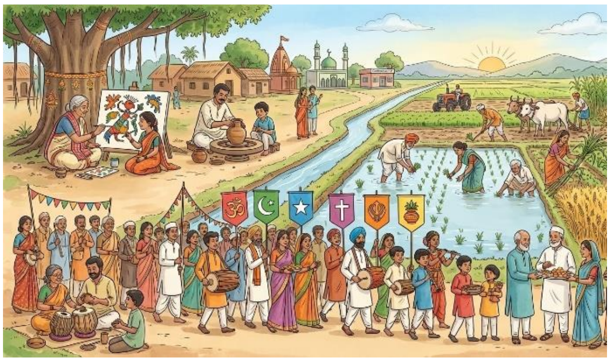

दक्षिण भारत में सांस्कृतिक विकास

दक्षिण भारत

- मध्यकाल में दक्षिण भारत में भी कला और संस्कृति का विकास हुआ।
- मंदिर वास्तुकला और साहित्य में प्रगति हुई।

प्रमुख विशेषताएँ

- मंदिर निर्माण की समृद्ध परंपरा
- नृत्य और संगीत का विकास
- क्षेत्रीय साहित्य का विकास

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

TOP 5 QUESTIONS

प्रश्न-1. भक्ति आंदोलन की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- भक्ति आंदोलन ईश्वर के प्रति प्रेम और भक्ति पर आधारित धार्मिक आंदोलन था। इसने जाति-भेद का विरोध किया, एकेश्वरवाद पर बल दिया और सरल भाषा में उपदेश दिए। इस आंदोलन ने समाज में समानता, प्रेम और भाईचारे की भावना को बढ़ावा दिया।

प्रश्न-2. सूफी मत क्या है? इसके मुख्य विचार लिखिए।

उत्तर- सूफी मत इस्लाम की रहस्यवादी विचारधारा है। इसमें प्रेम, सहिष्णुता, मानव समानता और ईश्वर भक्ति पर बल दिया जाता है। सूफी संत संगीत और आध्यात्मिक साधना के माध्यम से ईश्वर से एकता प्राप्त करने का मार्ग बताते थे।

प्रश्न-3. मध्यकालीन भारत में सांस्कृतिक विकास का वर्णन कीजिए।

उत्तर- मध्यकालीन भारत में कला, वास्तुकला, चित्रकला, संगीत और साहित्य का विकास हुआ। इंडो-इस्लामिक वास्तुकला विकसित हुई जिसमें गुम्बद, मीनार और मेहराब प्रमुख थे। मुगल काल में बाग, स्मारक और चित्रकला का भी विशेष विकास हुआ।

प्रश्न-4. गुरु नानक की शिक्षाओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर- गुरु नानक ने एक ईश्वर में विश्वास, सभी मनुष्यों की समानता और प्रेम व सेवा का संदेश दिया। उन्होंने मूर्ति पूजा, कर्मकांड और जाति-भेद का विरोध किया तथा सरल और नैतिक जीवन जीने पर बल दिया।

प्रश्न-5. मध्यकालीन भारत के समाज का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

उत्तर- मध्यकालीन समाज चार वर्गों में विभाजित था- विशिष्ट वर्ग, पुरोहित वर्ग, नगरवासी और कृषक वर्ग। विशिष्ट वर्ग में सुल्तान और सामंत थे जबकि कृषक वर्ग गाँवों में रहता था और कर देता था। व्यापार और शिल्प कार्य भी समाज का महत्वपूर्ण भाग थे।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

3

आधुनिक भारत

परिचय

आधुनिक भारत का निर्माण सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक परिवर्तनों के परिणामस्वरूप हुआ। इस काल में ब्रिटिश शासन, सामाजिक सुधार आंदोलनों और नई शिक्षा व्यवस्था के कारण भारतीय समाज, अर्थव्यवस्था और संस्कृति में बड़े परिवर्तन आए।

पश्चिम का उदय तथा इसका भारत पर प्रभाव

- 1450 ई. के बाद यूरोप में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए।
- इन परिवर्तनों ने यूरोप को शक्तिशाली बना दिया।

प्रमुख परिवर्तन

- **छापाखाना** का आविष्कार।
- **पुनर्जागरण** और **धार्मिक सुधार आंदोलन** का प्रसार।
- व्यापार के लिए नए समुद्री मार्गों की खोज।

यूरोप की प्रगति

- विज्ञान और तकनीक में उन्नति।
- शक्तिशाली सेना और नौसेना का विकास।
- तर्क और वैज्ञानिक सोच का विकास।

भारत में यूरोपीय व्यापार

- पुर्तगाली, डच, फ्रांसीसी और अंग्रेज भारत आए।
- भारत उस समय विश्व का बड़ा निर्यातक देश था।
- अंग्रेजों ने धीरे-धीरे भारत के व्यापार पर नियंत्रण कर लिया।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

ब्रिटिश शासन की स्थापना

- अंग्रेजों ने भारत की राजनीतिक स्थिति का लाभ उठाया।
- 1757 ई. के **प्लासी युद्ध** के बाद बंगाल पर उनका अधिकार हो गया।

ब्रिटिश शासन के चरण

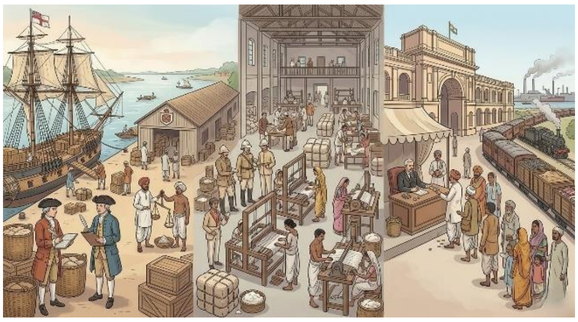

- **पहला चरण** – भारतीय व्यापार पर नियंत्रण।
- **दूसरा चरण** – उत्पादन और उद्योगों पर नियंत्रण।
- **तीसरा चरण** – राजनीतिक नियंत्रण और आर्थिक शोषण।

भारतीय उद्योगों पर प्रभाव

- ब्रिटिश मशीनों से बने सस्ते सामान भारत आने लगे।
- भारतीय हस्तशिल्प उद्योग कमजोर हो गए।

रेल और संचार

- 1853 ई. में पहली **रेलवे** शुरू हुई (बंबई से ठाणे)।
- टेलीग्राफ और डाक व्यवस्था भी शुरू हुई।
- इससे लोगों के बीच संपर्क बढ़ा और राष्ट्रीय जागरूकता बढ़ी।

अठारहवीं शताब्दी में भारत – अर्थव्यवस्था, समाज तथा संस्कृति

आर्थिक स्थिति

- कृषि मुख्य व्यवसाय था।
- लगातार युद्धों के कारण आर्थिक स्थिति कमजोर हो गई।

व्यापार

भारत से कई वस्तुएँ निर्यात होती थीं**: रेशम, सूती कपड़ा, चीनी, मसाले, नील**

विदेशों से आयात होने वाली वस्तुएँ: **मोती, ऊन, कॉफी, सोना**

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

सामाजिक स्थिति

- समाज में एकता की कमी थी।
- जाति, धर्म और भाषा के आधार पर भेदभाव था।

सामाजिक नियम

- विवाह, भोजन और पेशे में जाति नियमों का पालन जरूरी था।
- नियम तोड़ने पर व्यक्ति को जाति से बाहर कर दिया जाता था।

शिक्षा

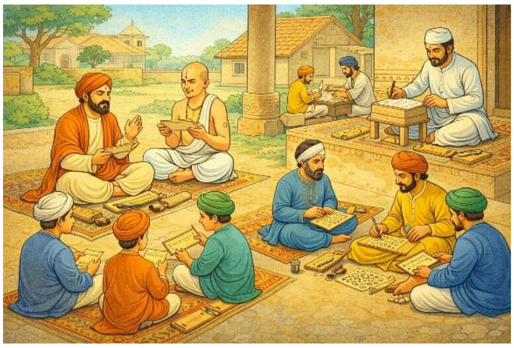

- शिक्षा पर राज्य का नियंत्रण नहीं था।
- शिक्षा का संरक्षण स्थानीय शासकों और दानदाताओं द्वारा होता था।

विज्ञान

- भारत पहले विज्ञान में उन्नत था।
- लेकिन इस समय विज्ञान और गणित का विकास कम हो गया।

हिंदू-मुस्लिम संबंध

- दोनों समुदायों के बीच सामान्यतः मित्रता थी।
- लोग एक-दूसरे के त्योहारों में भाग लेते थे।
- धार्मिक सहिष्णुता का वातावरण था।

सामाजिक परिस्थितियाँ

महिलाओं की स्थिति

- महिलाओं की स्थिति बहुत कमजोर थी।
- बाल विवाह प्रचलित था।
- महिलाओं को संपत्ति का अधिकार नहीं था।

प्रमुख सामाजिक कुरीतियाँ: बाल विवाह, बहुपत्नी प्रथा, सती प्रथा, पर्दा प्रथा

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

विधवाओं की स्थिति

- विधवाओं को रंगीन कपड़े पहनने की अनुमति नहीं थी।
- उन्हें सामाजिक कार्यक्रमों में भाग लेने की अनुमति नहीं थी।

जाति व्यवस्था

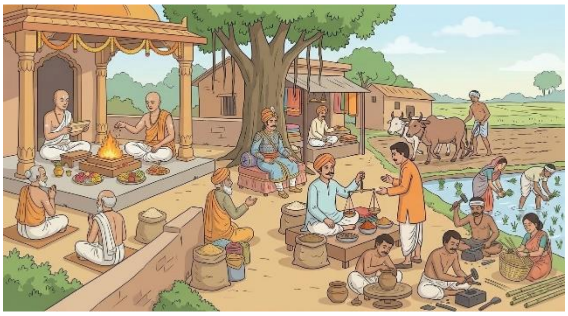

- अंतरजातीय विवाह की अनुमति नहीं थी।
- निम्न जातियों के साथ भोजन करना निषिद्ध था।

दास प्रथा

- समाज में दास प्रथा भी प्रचलित थी।
- दासों को कभी-कभी दहेज में भी दिया जाता था।

सामाजिक और धार्मिक सुधारक

ईसाई मिशनरियों की गतिविधियाँ

- ईसाई धर्म प्रचारक ईस्ट इंडिया कंपनी के कर्मचारियों के साथ भारत आए।
- उन्होंने धार्मिक प्रचार और शिक्षा का कार्य शुरू किया।
- उन्होंने **प्रिंटिंग प्रेस** और पत्रिकाओं का उपयोग किया।
- अंग्रेजी शिक्षा के माध्यम से पश्चिमी विचार भारत में फैले।

राजा राममोहन राय

- आधुनिक भारत के प्रमुख सामाजिक सुधारक माने जाते हैं।
- उन्होंने हिंदू समाज की कई कुरीतियों का विरोध किया।
- **सती प्रथा** के खिलाफ आवाज उठाई।

प्रमुख कार्य

- **ब्रह्म समाज** की स्थापना की।
- एकेश्वरवाद का समर्थन किया।
- मूर्ति पूजा और कर्मकांड का विरोध किया।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

देवेन्द्रनाथ टैगोर

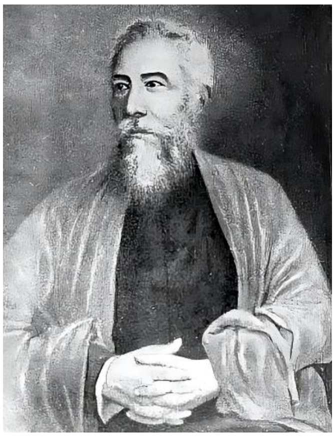

- राजा राममोहन राय के बाद ब्रह्म समाज के नेता बने।
- उन्होंने ब्रह्म समाज के विचारों का प्रचार किया।

केशवचंद्र सेन

- ब्रह्म समाज के प्रमुख नेता थे।
- उन्होंने सामाजिक सुधार और राष्ट्रीय जागरूकता को बढ़ावा दिया।

प्रार्थना समाज और रानाडे

1867 में **प्रार्थना समाज** की स्थापना हुई।

उद्देश्य

- अंतर्जातीय विवाह का समर्थन।
- विधवा पुनर्विवाह का समर्थन।
- महिलाओं और दलितों की स्थिति सुधारना।

रामकृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानंद

स्वामी विवेकानंद ने **रामकृष्ण मिशन** की स्थापना की।

प्रमुख विचार

- सभी धर्म समान हैं।
- स्वतंत्रता और समानता पर बल।
- वेदांत दर्शन का प्रचार।

थियोसोफिकल सोसाइटी और एनी बेसेंट

थियोसोफिकल सोसाइटी की स्थापना की गई।

उद्देश्य

- प्राचीन भारतीय धर्म और दर्शन का अध्ययन।
- शिक्षा को बढ़ावा देना।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

नारायण गुरु

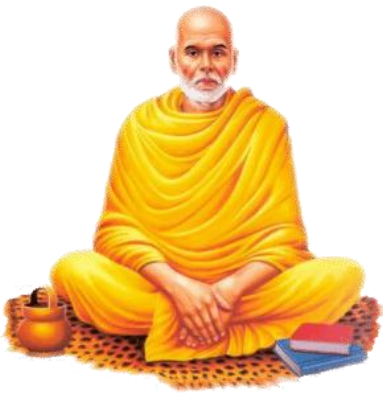

दक्षिण भारत के प्रमुख संत और समाज सुधारक।

विचार

- सामाजिक और आध्यात्मिक सुधार।
- समाज में समानता का प्रचार।

मुस्लिम सुधार आंदोलन

सर सैयद अहमद खान

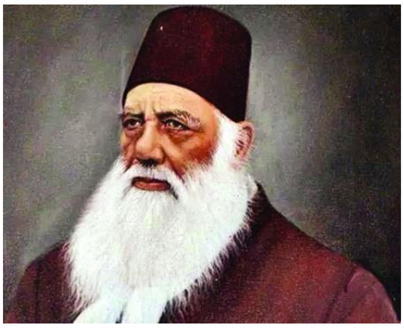

मुस्लिम समाज के प्रमुख सुधारक थे।

प्रमुख कार्य

- **अलीगढ़ आंदोलन** शुरू किया।
- **मोहम्मडन एंग्लो-ओरिएंटल कॉलेज** की स्थापना की।

प्रेस और आधुनिक भारतीय भाषाएँ तथा साहित्य का विकास

प्रेस का विकास

- 1798 में **लिथोग्राफी** का आविष्कार हुआ।
- इससे पुस्तकों और पत्रिकाओं का प्रकाशन बढ़ा।

प्रेस का प्रभाव

- जनता में जागरूकता बढ़ी।
- राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ।

साहित्य का विकास

- भारतीय भाषाओं में साहित्य का विकास हुआ।
- लेखकों ने मौलिक साहित्य और अनुवाद दोनों किए।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

प्रमुख समाचार पत्र

Amrita Bazar Patrika

OVER 5,000 BUTCHERED IN NOAKHALI AND TIPPERAH

UNPRECEDENTED LAWLESSNESS AND REIGN OF TERROR

WOMEN & CHILDREN HIDE IN JUNGLES

Police Refuse Help: Kripalani & Bose Rush To Scene

POWERS CONCEDED TO NEHRU REGRETTED

PREMIER PANT APPEALS FOR COMMUNAL HARMONY

INDIVIDUAL & COLLECTIVE EFFORT URGED

Enthusiastic Reception At Allahabad

ENQUIRY INTO CALCUTTA DISTURBANCES

TRAGIC HAPPENINGS IN NOAKHALI

POLITICAL DEPT. ENGINEERED ANTI-NEHRU DEMONSTRATIONS

KHAN ABDUL GHAFFAR KHAN'S CHARGES

Frontier Policy Attacked: Unholy Alliance With League

MR. KRIPALANI'S ELECTION TO PRESIDENTSHIP

बंगाल: द हिंदू पैट्रियट, अमृत बाजार पत्रिका

बंबई: केसरी, मराठा

मद्रास: द हिंदू, स्वदेशमित्र

पंजाब: द ट्रिब्यून, कोहिनूर

समाचार पत्रों की भूमिका

- ब्रिटिश नीतियों की आलोचना की।
- राष्ट्रीय आंदोलन को बढ़ावा दिया।
- जनता को राजनीतिक शिक्षा दी।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद का भारत

स्वतंत्र भारत की उपलब्धियाँ

- भारत एक **धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक राष्ट्र** बना।
- संसदीय शासन प्रणाली स्थापित हुई।

राष्ट्रीय आन्दोलन – प्रारम्भिक चरण (शुरूआत)

- भारत में राष्ट्रीय आंदोलन का मुख्य कारण ब्रिटिश उपनिवेशवाद था।
- अंग्रेजों की नीतियों से किसान, मजदूर और व्यापारी प्रभावित हुए।
- शिक्षित भारतीयों ने सबसे पहले अंग्रेजी शासन की वास्तविकता को समझा।

प्रारम्भिक राष्ट्रवादी

- शिक्षित भारतीयों ने राष्ट्रीय चेतना फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- उन्होंने अंग्रेजी शासन के विरुद्ध आवाज उठानी शुरू की।

प्रारम्भिक उद्देश्य

- **1919 ई. – 1934 ई. की अवधि**
- इस अवधि में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन अधिक व्यापक और संगठित हो गया।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- इस समय **महात्मा गांधी** राष्ट्रीय आंदोलन के प्रमुख नेता बनकर उभरे।

प्रमुख घटनाएँ

- **1919 –** रॉलेट एक्ट लागू किया गया, जिसका पूरे देश में विरोध हुआ।
- **1919 –** जलियांवाला बाग हत्याकांड हुआ, जिससे देश में आक्रोश फैल गया।
- **1920 –** असहयोग आंदोलन शुरू किया गया।
- **राष्ट्रीय एकता** को मजबूत करना।

होम रूल आंदोलन

- यह आंदोलन एनी बेसेंट और बाल गंगाधर तिलक के नेतृत्व में शुरू हुआ।
- इसका उद्देश्य भारत को स्वशासन दिलाना था।

प्रमुख विशेषताएँ

- पूरे देश में राजनीतिक **जागरूकता फैलाना।**
- लोगों को स्वतंत्रता आंदोलन से जोड़ना।
- ब्रिटिश शासन के विरुद्ध जनमत तैयार करना।

1905 ई. – 1918 ई. की अवधि

इस अवधि की प्रमुख घटनाएँ

- 1905 में **बंगाल विभाजन** हुआ।
- इसके विरोध में स्वदेशी आंदोलन शुरू हुआ।
- भारतीयों ने विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया।
- राष्ट्रीय आंदोलन अधिक व्यापक हो गया।

आंदोलन की विशेषताएँ

- राष्ट्रीय चेतना में वृद्धि।
- स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग।
- राजनीतिक जागरूकता का प्रसार।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

1919 ई. – 1934 ई. की अवधि

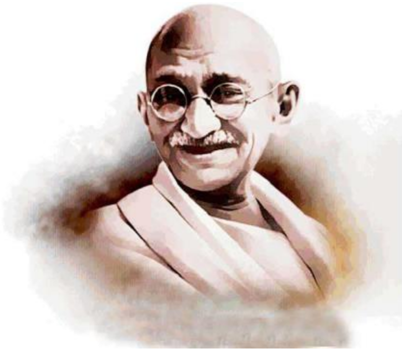

- इस अवधि में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन अधिक **व्यापक और संगठित** हो गया।
- इस समय **महात्मा गांधी** राष्ट्रीय आंदोलन के प्रमुख नेता बनकर उभरे।

प्रमुख घटनाएँ

- **1919 –** रॉलेट एक्ट लागू किया गया, जिसका पूरे देश में विरोध हुआ।
- **1919 –** जलियांवाला बाग हत्याकांड हुआ, जिससे देश में आक्रोश फैल गया।
- **1920 –** असहयोग आंदोलन शुरू किया गया।

सविनय अवज्ञा आंदोलन

- **1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन** शुरू हुआ।
- महात्मा गांधी ने **दांडी यात्रा** करके नमक कानून का विरोध किया।
- लोगों ने अंग्रेजी कानूनों का शांतिपूर्ण तरीके से उल्लंघन किया।

आंदोलन की विशेषताएँ

- आंदोलन में किसानों, मजदूरों, छात्रों और महिलाओं की भागीदारी बढ़ी।
- राष्ट्रीय आंदोलन पूरे देश में फैल गया।
- ब्रिटिश शासन के खिलाफ जनजागरण तेज हो गया।

स्वतंत्रता की प्राप्ति

- लंबे संघर्ष के बाद भारत को 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्रता प्राप्त हुई।
- भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में कई नेताओं का योगदान था।
- स्वतंत्रता के साथ ही भारत एक स्वतंत्र राष्ट्र बना।

स्वतंत्रता आंदोलन का महत्व

- राष्ट्रीय एकता को मजबूत किया।
- लोकतांत्रिक शासन की नींव रखी।
- भारतीयों में स्वतंत्रता और अधिकारों की भावना विकसित हुई।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

TOP 5 QUESTIONS

प्रश्न-1. पश्चिम के उदय का भारत पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर- पश्चिम के उदय के बाद यूरोपीय देश भारत में व्यापार करने लगे। धीरे-धीरे अंग्रेजों ने भारत के व्यापार और राजनीति पर नियंत्रण कर लिया। इससे भारतीय उद्योगों को नुकसान हुआ और भारत ब्रिटिश शासन के अधीन हो गया।

प्रश्न-2. अठारहवीं शताब्दी में भारत की आर्थिक और सामाजिक स्थिति का वर्णन कीजिए।

उत्तर- अठारहवीं शताब्दी में भारत की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि पर आधारित थी। लगातार युद्धों और राजनीतिक अस्थिरता के कारण आर्थिक स्थिति कमजोर हो गई। समाज में जाति, धर्म और भाषा के आधार पर भेदभाव था।

प्रश्न-3. राजा राममोहन राय के सामाजिक सुधारों का वर्णन कीजिए।

उत्तर- राजा राममोहन राय आधुनिक भारत के प्रमुख समाज सुधारक थे। उन्होंने सती प्रथा का विरोध किया और ब्रह्म समाज की स्थापना की। उन्होंने एकेश्वरवाद का समर्थन किया तथा मूर्ति पूजा और सामाजिक कुरीतियों का विरोध किया।

प्रश्न-4. प्रेस और समाचार पत्रों ने राष्ट्रीय चेतना के विकास में क्या भूमिका निभाई?

उत्तर- प्रेस ने जनता में जागरूकता फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। समाचार पत्रों ने ब्रिटिश नीतियों की आलोचना की और राष्ट्रीय आंदोलन को मजबूत किया। इससे लोगों में राजनीतिक चेतना और राष्ट्रीय एकता बढ़ी।

प्रश्न-5. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के प्रमुख चरणों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

उत्तर- राष्ट्रीय आंदोलन का प्रारंभ शिक्षित भारतीयों से हुआ। इसके बाद होम रूल आंदोलन, स्वदेशी आंदोलन, असहयोग आंदोलन और सविनय अवज्ञा आंदोलन चले। लंबे संघर्ष के बाद 15 अगस्त 1947 को भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

4

भारत में शिक्षा

परिचय

भारत की संस्कृति के विकास में **शिक्षा** का महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा के माध्यम से समाज अपने अनुभव, ज्ञान और परंपराओं को अगली पीढ़ी तक पहुँचाता है। समय के साथ भारतीय शिक्षा प्रणाली में निरंतर परिवर्तन और विकास होता रहा है।

प्राचीन युग में शिक्षा

वैदिक युग

- शिक्षा **गुरुकुल प्रणाली** में दी जाती थी।
- छात्र गुरु के आश्रम में रहकर शिक्षा प्राप्त करते थे।
- शिक्षा का माध्यम मुख्यतः **मौखिक** था।
- अध्ययन की शुरुआत **उपनयन संस्कार** से होती थी।
- वेद, धर्मशास्त्र, व्याकरण, तर्कशास्त्र आदि पढ़ाए जाते थे।
- गुरु और शिष्य के बीच गहरा संबंध होता था।

मौर्य काल

- समाज में आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन हुए।
- व्यापारियों के संघ शिक्षा देने में सहायक बने।
- तकनीकी शिक्षा का विकास हुआ।
- खगोल विज्ञान, आयुर्वेद और चिकित्सा का विकास हुआ।
- **चरक संहिता** और **सुश्रुत संहिता** चिकित्सा के महत्वपूर्ण ग्रंथ थे।
- चाणक्य का **अर्थशास्त्र** शिक्षा और प्रशासन से संबंधित महत्वपूर्ण ग्रंथ था।

गुप्त काल

- जैन और बौद्ध शिक्षा संस्थानों का विकास हुआ।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- शिक्षा मठों और विहारों में दी जाती थी।
- नालंदा, वाराणसी, उज्जैन शिक्षा के प्रमुख केंद्र थे।
- विदेशों से भी विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने आते थे।
- संस्कृत शिक्षा का मुख्य माध्यम था।

उत्तर गुप्त काल

- शिक्षा के नए केंद्र मंदिरों और मठों में बने।
- उच्च शिक्षा के प्रमुख केंद्र:
  - तक्षशिला
  - उज्जैन
  - गया
  - नालंदा
- संस्कृत शिक्षा का प्रमुख माध्यम था।
- शिक्षा मुख्यतः उच्च वर्ग तक सीमित थी।

तक्षशिला

शिक्षा का उद्देश्य

- व्यक्ति के **सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास** करना।
- मानसिक और बौद्धिक क्षमता को बढ़ाना।
- आत्मज्ञान और आत्मसंतुष्टि प्राप्त करना।
- ज्ञान के माध्यम से रचनात्मक क्षमता विकसित करना।

विषय

- धातु विज्ञान, ईंट बनाना और माप-तौल का ज्ञान।
- चिकित्सा और औषधि का अध्ययन।
- गणित के मुख्य भाग: अंकगणित, रेखागणित, बीजगणित
- खगोल विज्ञान और ज्योतिष का अध्ययन।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- आर्यभट्ट का **आर्यभटीय** गणित का महत्वपूर्ण ग्रंथ था।

भाषा

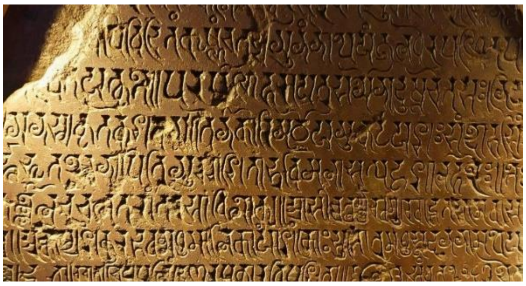

- संस्कृत शिक्षा और विद्वानों की भाषा थी।
- प्राकृत जनता की भाषा के रूप में विकसित हुई।
- पाली भाषा का उपयोग बौद्ध साहित्य में हुआ।
- अपभ्रंश भाषा का उपयोग साहित्य में हुआ।
- दक्षिण भारत में द्रविड़ भाषाएँ प्रचलित थीं।
- समाज में महिलाओं की शिक्षा के अवसर सीमित थे।

मध्यकालीन भारत में शिक्षा

- दिल्ली सल्तनत के समय मुस्लिम शिक्षा प्रणाली विकसित हुई।
- प्राथमिक शिक्षा संस्थानों को **मकतब** कहा जाता था।
- उच्च शिक्षा संस्थानों को **मदरसा** कहा जाता था।
- शिक्षा संस्थान शासकों और दानदाताओं के सहयोग से चलते थे।
- पाठ्यक्रम में कानून, इतिहास, गणित, दर्शन और चिकित्सा शामिल थे।

मुगल काल में शिक्षा

- मुगल शासकों ने शिक्षा को संरक्षण दिया।
- शिक्षा मंदिरों और मस्जिदों में दी जाती थी।
- फारसी और संस्कृत शिक्षा के प्रमुख माध्यम थे।
- अकबर ने शिक्षा सुधार के प्रयास किए।
- अकबर के दरबार में कई विद्वान थे।

आधुनिक काल में शिक्षा

18वीं शताब्दी – आधुनिक काल का प्रारंभ

- अंग्रेजों ने प्रारंभ में शिक्षा पर ध्यान नहीं दिया।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- वारेन हेस्टिंग्स ने कलकत्ता मदरसा स्थापित किया।
- वाराणसी में संस्कृत कॉलेज स्थापित किया गया।
- मिशनरियों ने प्राथमिक विद्यालय खोले।

19वीं शताब्दी

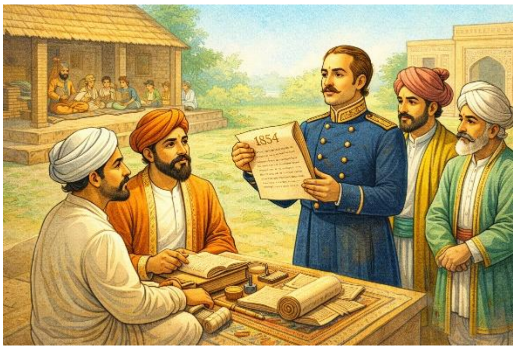

- 1813 के चार्टर एक्ट में शिक्षा के लिए धन निर्धारित किया गया।
- मैकाले के मिनट से अंग्रेजी शिक्षा को बढ़ावा मिला।
- 1854 का **वुड्स डिस्पैच** शिक्षा नीति का महत्वपूर्ण दस्तावेज था।
- 1857 में कलकत्ता, बंबई और मद्रास विश्वविद्यालय स्थापित हुए।

20वीं शताब्दी का प्रारंभ

- 1904 का विश्वविद्यालय अधिनियम लागू किया गया।
- शिक्षा में सुधार के प्रयास किए गए।
- अंग्रेजी शिक्षा के कारण नए शिक्षित वर्ग का उदय हुआ।
- समाचार पत्रों ने राष्ट्रीय चेतना बढ़ाई।

अंग्रेजी शिक्षा का प्रभाव

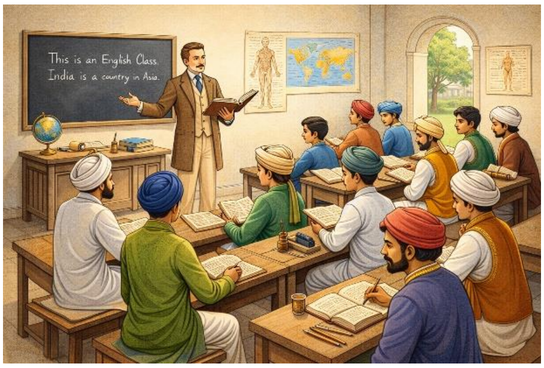

- प्रशासनिक कार्यों के लिए अंग्रेजी शिक्षा को बढ़ावा दिया गया।
- अंग्रेजी एक सामान्य संपर्क भाषा बन गई।
- स्वतंत्रता, लोकतंत्र और समानता के विचार फैलने लगे।
- शिक्षित भारतीयों में राष्ट्रीय चेतना विकसित हुई।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में शिक्षा

प्रारंभिक शिक्षा

- 14 वर्ष तक के बच्चों के लिए **निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा** का प्रावधान।
- शिक्षा को मौलिक अधिकार के रूप में मान्यता।
- **सर्व शिक्षा अभियान** शुरू किया गया।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने पर बल दिया गया।

माध्यमिक शिक्षा

- कक्षा 9 से 12 तक की शिक्षा।
- व्यक्तित्व विकास और कौशल विकास पर जोर।
- **व्यावसायिक शिक्षा** का विकास।
- राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान शुरू किया गया।

उच्च शिक्षा

- विश्वविद्यालय और महाविद्यालय उच्च शिक्षा के केंद्र हैं।
- उच्च शिक्षा देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
- IIT और IIM जैसे संस्थान स्थापित हुए।
- उच्च शिक्षा में गुणवत्ता सुधार की आवश्यकता है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

TOP 5 QUESTIONS

प्रश्न-1. प्राचीन भारत में शिक्षा प्रणाली की प्रमुख विशेषताएँ क्या थीं?

उत्तर- प्राचीन भारत में शिक्षा गुरुकुल प्रणाली में दी जाती थी। शिक्षा मौखिक होती थी और गुरु-शिष्य परंपरा महत्वपूर्ण थी। वेद, धर्मशास्त्र, व्याकरण और तर्कशास्त्र जैसे विषय पढ़ाए जाते थे तथा शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तित्व विकास था।

प्रश्न-2. मध्यकालीन भारत में शिक्षा व्यवस्था का वर्णन कीजिए।

उत्तर- मध्यकाल में शिक्षा मकतब और मदरसों में दी जाती थी। प्राथमिक शिक्षा मकतब में और उच्च शिक्षा मदरसों में होती थी। पाठ्यक्रम में कानून, इतिहास, गणित, दर्शन और चिकित्सा शामिल थे।

प्रश्न-3. वुड्स डिस्पैच (1854) का महत्व क्या था?

उत्तर- वुड्स डिस्पैच ने भारत में आधुनिक शिक्षा नीति की आधारशिला रखी। इसमें विश्वविद्यालयों की स्थापना, शिक्षक प्रशिक्षण, महिला शिक्षा और आधुनिक शिक्षा के प्रसार पर जोर दिया गया।

प्रश्न-4. अंग्रेजी शिक्षा का भारत पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर- अंग्रेजी शिक्षा से एक शिक्षित वर्ग का विकास हुआ। अंग्रेजी संपर्क भाषा बन गई और पश्चिमी विचार जैसे स्वतंत्रता और लोकतंत्र का प्रसार हुआ। इससे राष्ट्रीय चेतना और स्वतंत्रता आंदोलन को बल मिला।

प्रश्न-5. स्वतंत्रता के बाद भारत में शिक्षा के प्रमुख लक्ष्य क्या थे?

उत्तर- स्वतंत्रता के बाद शिक्षा का उद्देश्य सभी को शिक्षा उपलब्ध कराना, सामाजिक समानता बढ़ाना और राष्ट्रीय विकास को प्रोत्साहित करना था। प्रारंभिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षा के विस्तार पर विशेष ध्यान दिया गया।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

5

भारतीय समाज की संरचना

परिचय

भारत का समाज बहुत विविधतापूर्ण है, जिसमें भाषा, धर्म, परंपराएँ और रीति-रिवाजों की भिन्नता पाई जाती है। इन सभी तत्वों से मिलकर भारतीय समाज की सामाजिक संरचना बनती है और समाज की विभिन्न संस्थाएँ कार्य करती हैं।

भारतीय समाज का ढांचा

- भारत में प्रारम्भिक सामाजिक संगठन **जनजाति समूह** थे।
- इन समूहों में सभी सदस्य समान माने जाते थे।
- सभी सदस्य एक ही पूर्वज की संतान होने का विश्वास रखते थे।
- समूह के संसाधनों पर सभी का समान अधिकार होता था।
- सामाजिक भेदभाव मुख्यतः आयु और लिंग के आधार पर होता था।

वर्ण व्यवस्था का विकास

प्रारम्भ में समाज **चार** वर्णों में विभाजित हुआ: ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र

- **ब्राह्मण** – धार्मिक कार्य करते थे।
- **क्षत्रिय** – शासन और युद्ध से जुड़े कार्य करते थे।
- **वैश्य** – कृषि और व्यापार करते थे।
- **शूद्र** – सेवा कार्य करते थे।

जाति व्यवस्था का विकास

- समय के साथ जातियों की संख्या बढ़ती गई।
- नए व्यवसाय, नए लोगों के आगमन और विवाह संबंधों के कारण नई जातियाँ बनीं।
- धर्मशास्त्रों में प्रत्येक जाति के कर्तव्यों को निर्धारित किया गया।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

अस्पृश्यता

समाज में कुछ लोगों को अछूत मानकर उनसे दूरी बनाए रखने की प्रथा को **अस्पृश्यता** कहते हैं।

मुख्य बिंदु

- यह प्रथा वैदिक काल के अंतिम चरण में विकसित हुई।
- अछूतों को समाज के बाहर माना जाता था।
- उन्हें गाँव के बाहर बसना पड़ता था।
- उनके कार्य मृत पशुओं को हटाना और अंतिम संस्कार करना थे।
- महात्मा गांधी ने अछूतों को **हरिजन** नाम दिया।
- भारत सरकार ने अस्पृश्यता को समाप्त करने के लिए कानून बनाए।

दास प्रथा

ऐसी व्यवस्था जिसमें व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति की सेवा करने के लिए बाध्य होता था, उसे **दास प्रथा** कहा जाता है।

मुख्य बिंदु

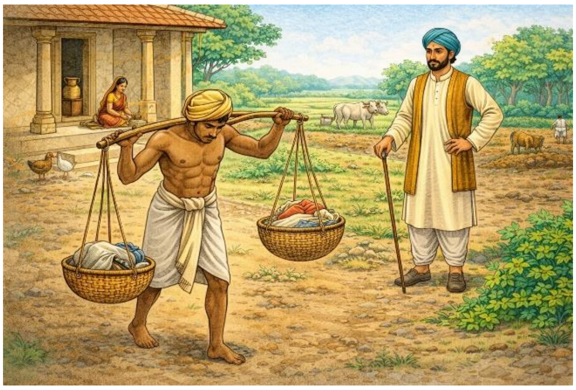

- भारत में दास प्रथा प्राचीन समय से प्रचलित थी।
- दास अपने स्वामी के घर में सेवा करते थे।
- दास जन्म से या युद्ध में बंदी बनकर भी बन सकते थे।
- कुछ लोग स्वयं को बेचकर भी दास बन जाते थे।
- समय के साथ यह प्रथा समाप्त हो गई।

पुरुषार्थ, आश्रम और संस्कार

पुरुषार्थ: मानव जीवन के चार मुख्य उद्देश्यों को **पुरुषार्थ** कहा जाता है।

चार पुरुषार्थ: धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष

आश्रम व्यवस्था

मानव जीवन को चार आश्रमों में बाँटा गया था: ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

मुख्य बिंदु

- ब्रह्मचर्य आश्रम में शिक्षा प्राप्त की जाती थी।
- गृहस्थ आश्रम में परिवार का पालन-पोषण किया जाता था।
- वानप्रस्थ में सांसारिक जीवन से दूर होकर साधना की जाती थी।
- संन्यास आश्रम में व्यक्ति मोक्ष प्राप्ति का प्रयास करता था।

संस्कार

जीवन के विभिन्न चरणों में किए जाने वाले धार्मिक अनुष्ठानों को **संस्कार** कहा जाता है।

मुख्य संस्कार: गर्भाधान, जातकर्म, उपनयन, विवाह, अन्त्येष्टि

जजमानी प्रथा

ग्रामीण समाज में सेवा देने वाले और सेवा प्राप्त करने वाले वर्गों के बीच पारंपरिक संबंध को **जजमानी प्रथा** कहा जाता है।

मुख्य बिंदु

- कारीगर और सेवक वर्ग जमींदारों को सेवाएँ देते थे।
- बदले में उन्हें अनाज या भूमि मिलती थी।
- यह संबंध पारंपरिक और स्थायी होता था।
- आधुनिक समय में यह प्रथा धीरे-धीरे समाप्त हो रही है।

परिवार

परिवार समाज की सबसे छोटी और महत्वपूर्ण इकाई है।

मुख्य बिंदु

- पारंपरिक भारत में **संयुक्त परिवार** प्रचलित थे।
- संयुक्त परिवार में कई पीढ़ियाँ साथ रहती थीं।
- परिवार का मुखिया सामान्यतः सबसे बड़ा पुरुष होता था।
- आधुनिक समाज में **एकल परिवार** भी प्रचलित हो गए हैं।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

विवाह

स्त्री और पुरुष के बीच स्थापित सामाजिक और धार्मिक संबंध को **विवाह** कहा जाता है।

मुख्य बिंदु

- विवाह परिवार की स्थापना का आधार है।
- पारंपरिक समाज में विवाह माता-पिता द्वारा तय किए जाते थे।
- सामान्यतः एक पुरुष का एक स्त्री से विवाह होता है।
- आधुनिक कानूनों में बहुविवाह पर प्रतिबंध लगाया गया है।

नारी जाति

मुख्य बिंदु

- वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति अपेक्षाकृत अच्छी थी।
- बाद में उनकी स्थिति कमजोर होती गई।
- महिलाओं को शिक्षा और संपत्ति के अधिकार सीमित थे।
- बाल विवाह और सती प्रथा जैसी कुरीतियाँ प्रचलित हो गईं।
- सामाजिक सुधार आंदोलनों से महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ।

भारत के जनजाति समुदाय

जनजाति

ऐसे समुदाय जो प्राचीन समय से विशेष क्षेत्रों में रहते हैं और जिनकी अपनी अलग संस्कृति होती है, उन्हें **जनजाति** कहते हैं।

मुख्य बिंदु

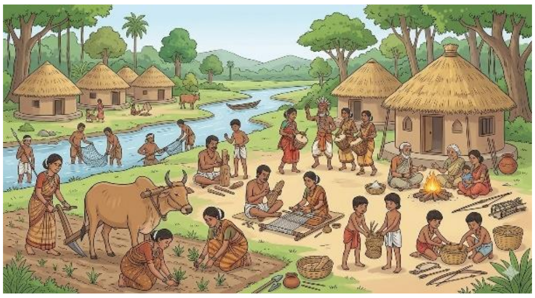

- जनजातियाँ सामान्यतः पहाड़ी और वन क्षेत्रों में रहती हैं।
- उनकी अपनी भाषा, परंपराएँ और सामाजिक व्यवस्था होती है।
- भारत में इन्हें **आदिवासी** भी कहा जाता है।
- भारतीय संविधान में इन्हें **अनुसूचित जनजाति** का दर्जा दिया गया है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

जनजातीय जनसंख्या के वितरण के सात क्षेत्र

उत्तरी क्षेत्र – हिमालय के पर्वतीय क्षेत्रों में रहने वाली जनजातियाँ पाई जाती हैं।

उत्तर-पूर्वी क्षेत्र – असम और उत्तर-पूर्वी राज्यों में जनजातियों की सबसे अधिक विविधता मिलती है।

पूर्वी क्षेत्र – झारखंड, उड़ीसा और पश्चिम बंगाल में अनेक प्रमुख जनजातियाँ रहती हैं।

मध्य क्षेत्र – मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ भारत का सबसे बड़ा जनजातीय क्षेत्र माना जाता है।

पश्चिमी क्षेत्र – राजस्थान और गुजरात के पहाड़ी व वन क्षेत्रों में जनजातियाँ निवास करती हैं।

दक्षिणी क्षेत्र – आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु और केरल के जंगलों में जनजातियाँ रहती हैं।

द्वीपीय क्षेत्र – अंडमान-निकोबार द्वीपों में प्राचीन और विशिष्ट जनजातियाँ पाई जाती हैं।

TOP 5 QUESTIONS

प्रश्न-1. भारतीय समाज की संरचना से क्या तात्पर्य है?

उत्तर- भारतीय समाज की संरचना से तात्पर्य समाज के विभिन्न वर्गों, संस्थाओं और संबंधों से है। इसमें जाति, परिवार, विवाह, जनजाति और सामाजिक संस्थाएँ शामिल हैं जो समाज के संगठन और कार्यप्रणाली को निर्धारित करती हैं।

प्रश्न-2. अस्पृश्यता क्या है?

उत्तर- अस्पृश्यता वह सामाजिक प्रथा है जिसमें कुछ लोगों को अछूत मानकर उनसे दूरी रखी जाती है। उन्हें समाज के बाहर रखा जाता था और कई सामाजिक अधिकारों से वंचित किया जाता था।

प्रश्न-3. जजमानी प्रथा क्या थी?

उत्तर- जजमानी प्रथा ग्रामीण समाज की पारंपरिक व्यवस्था थी जिसमें कारीगर और सेवा देने वाले लोग जमींदारों या किसानों को सेवाएँ देते थे और बदले में उन्हें अनाज, वस्त्र या भूमि प्राप्त होती थी।

प्रश्न-4. आश्रम व्यवस्था के चार चरण कौन-कौन से हैं?

उत्तर- आश्रम व्यवस्था के चार चरण हैं – ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास। इन चारों चरणों में व्यक्ति अपने जीवन के विभिन्न कर्तव्यों का पालन करता है।

प्रश्न-5. जनजाति किसे कहते हैं?

उत्तर- जनजाति ऐसे समुदाय होते हैं जो प्राचीन समय से विशेष क्षेत्रों में रहते हैं और जिनकी अपनी अलग भाषा, संस्कृति, परंपराएँ और सामाजिक व्यवस्था होती है। भारत में इन्हें आदिवासी या अनुसूचित जनजाति भी कहा जाता है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/